International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Volume 7 -Issue 12-December -2017,
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

यादवेंद्र शर्मा चन्द्र के उपन्यासो मे मार्क्सवाद

डॉ. पूरण मल वर्मा, सह-आचार्य ,हिंदी
राजकीय महा वद्यालय,टोंक

प्रस्तावना

हिंदी कथा साहित्य में राजस्थान के ख्यातनाम साहित्यकार यादवेंद्र शर्मा चंद्र के समग्र साहित्य का वश्लेषणात्मक अध्ययन करें तो स्पष्ट होता है क उन्होंनेसमाज के प्रत्येक वर्ग को स्पर्श करते हुए उपन्यास एवं कहानियों में चत्रित करने का प्रयास कया है साथ ही राजस्थानी संस्कृति मे व्याप्त नैतिकता रजवाड़ों में महिलाओं की दयनीय स्थिति का संहावलोकन कर समाज में व्याप्त उच्च मध्य और निम्न वर्गीय स्त्रियों की दिशा एवं दशा पर अपने वचारों का अनुमोदन कया है वह सराहनीय है तथा समकालीन परिवेश चुनौतियां नारी वषमता देश एवं राजस्थानी संस्कृति में व्याप्त वसंगतियों को यथार्थ रूप में प्रस्तुत कर भावी पीढ़ी के लए नवीन मार्ग प्रशस्त कया है इस प्रकार के साहित्य का सृजन वही साहित्यकार कर सकता है जो समाज में रहते हुए प्रत्येक पहलू को स्पर्श करते हुए साहित्य में दर्पण की भांति स्वच्छ रूप में प्रस्तुत कर सकें यह पुनीत कार्य चंद्र जी ने अपने संपूर्ण कथा साहित्य में रजवाड़ा संस्कृति को प्रस्तुत कर उस समय की जनता की वषमताओं दुर्बलता एवं आ र्थक वपन्नता का जो स्वरूप उपन्यासों में प्रस्तुत कया है एवं डोलन राजपूत रानियां द लत शो षत वं चत वर्ग की स्त्रियों की वस्तुस्थिति को नवीन स्वरूप प्रदान कर साहित्य में प्रमुखता प्रदान करने का जो प्रयास चंद्र ने कया है वह अन्यत्र दुर्लभ है। इस वषय को लेकर युगीन चेतना एवं मार्क्सवादी अवधारणाओं का सं क्षप्त रूप लोक कथाओं के माध्यम से चंद्र ने कथा साहित्य में कया है उसे सार्थक रूप में प्रस्तुत कया जा रहा है।

मार्क्सवाद ओर चन्द्र का औपन्या सक स्वरूप

हिंदी साहित्य में उपन्यास वधा की बात करें तो यादवेंद्र शर्मा चंद्र ने अपने सभी उपन्यासों में स्त्री जाति के व भन्न सामाजिक संबंधों के रहस्य को उद्घाटन करने का प्रयास कया है जो दृष्ट्व्य और सराहनीय हैं।नारी जीवन की सफलता एव असफलता की वसंगति में कया कार्यों मे उनका आकलन इनके सभी उपन्यासों में स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।नारी के व वध रूपों में मां ,बहन ,बेटी, पत्नी ,भाभी ,ननद , मत्र,के परस्पर रिश्तो को पत्नी,पुत्री ओर मा के रूप प्रतिस्था पत की है तो कभी कूटनी का काम करती है। इस प्रकार नारी जीवन में होने वाली वसंगतियों का यथार्थ अंकन उनके उपन्यासों में देखा गया है। सामंती व्यवस्था का यथार्थ चत्रण और नारी के साथ में घटित होने वाली व भन्न सामाजिक घटनाओं राजनीतिक चेतना दशा एवं दिशा को लेकर के" एक और मुख्यमंत्री" प्रजा राम "तथा अन्य

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Volume 7 -Issue 12-December -2017,
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

उपन्यासों में खुल के नारी का यथार्थ प्रस्तुत कया है। धरती की पीडा,बहरू पया, द लत शो षत पी ड़त वं चत नारी शक्षा आ थक स्वावलंबन आदि वषयों पर पर्याप्त लखा है

निम्न वर्ग में जब शक्षा नहीं चलेगी शराब खोरी नहीं रुकेगी तब तक परिवर्तन नहीं हो सकता। क्रांति और समृ द्ध नहीं आ सकती है। शोषण का सल सला जारी रहेगा "हजार घोड़ोंपर सवार उपन्यास के चरित्रों का अध्ययन कया जाए तो यथास्थिति को प्रस्तुत करते हैं। मार्क्सवादी समाजवादी वचारों से अनुप्रा णत इन उपन्यासों में स्वतंत्रता प्राप्ति के लए संघर्ष में आजादी के बाद सत्ता की जोड़-तोड़ चुनावी राजनीति गुटबाजी वोटों की राजनीति बड़े बंदी अन्याय अत्याचार के वरुद्ध बगावत के लए उठते हुए सब दिखाई देते हैं। नारी शोषण के वरुद्ध शंखनाद कर गरीब द लत शो षत जनों के उत्थान के लए कए जाने वाले प्रयासों को प्रस्तुत करते हैं।

यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' के उपन्यास में भारतीय नारी पुरूष के उत्थान को उपन्यास का नायक प्रजाराम प्रतीक मात्र है। जो आपातकाल की मान सकता का द्योतक है। इंजीनियर आशुतोष अपने स्वार्थ के लए अनेक भ्रष्टाचार करता, गलत मस्ट्रोल बनाता है। सीमेन्ट के मामले में धांधली करता है। लाखों के वारे-न्यारे करता है।बड़े नेताओं के मेल-जोल के कारण कोई उसका वरोध नहीं कर पाता। पुरस्कार प्राप्त करने की कामना में अमानवीय तरीके से बलात् की गई नसबन्दियाँ, सौन्दर्गीकरण के नाम पर मकानों पर बुल्डोजर के माध्यम से धूल-धूसरित करना आदि घटनाओं का बेबाक, बेलाग, स्पष्ट व सटीक, अंकन निश्चय ही साहस का कार्य है। घिनौनी राजनीति का खुलकर पर्दाफाश करने वाला यह उपन्यास अपने वक्त का सही दस्तावेज आपातकाल की पृष्ठभू म में प्रजाराम का अपना व शष्ट स्थान है। मार्क्सवादी समाजवादी वचारों से अनुप्रा णत उपन्यास एक नवीन दस्तावेज है।

(1) आ खरी साँस तक:-प्रस्तुत उपन्यास की कहानी समाज के ऐसे वर्ग की कहानी है, जो सामन्ती शोषण का शकार तो रहा ही है, क्रूर जातीय उत्पीड़न का शकार भी रहा है। इस उपन्यास में उन स्थितियों का जीवन्त चत्रण हुआ है, जिनमें हरिजन जीते हैं और अनेक समस्याओं से जूझते हैं।1 इस वर्ग के जीवन के हाहाकार को 'चन्द्र' जी की लेखनी ने ल पबद्ध ही नहीं कया है। वर्ग संघर्ष की वचारधारा की पृष्ठभू म में उसे श्र मक वर्ग का रूप देकर सम्पूर्ण संघर्ष को नया परिप्रेक्ष्य भी पूरा कया है।2 वर्ग संघर्ष का प्रतिपादन करने के साथ ही मार्क्सवादी समाजवादी वचारधारा की व्याख्या से युक्त यह उपन्यास समसामयिक दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।प्रस्तुत उपन्यास में राजस्थान की एक हरिजन बस्ती के जीवन पर आधारित है। यह एक ऐसा नरक है जहाँ आजादी कभी आई ही नहीं, छुआछूत के पीछे वहाँ अभी तक अछूतों को पीटा जाता है। जीवन नामक नेता, गाँव के सुधार के बहाने गरीब, काम करने वाली लड़ कयों की इज्जत पर हाथ डालते हैं। कुछ अछूत नौजवान सरकार की ओर से हरिजन वर्ग पर कये जाने

वाले लापरवाही के वरुद्ध आवाज उठाते हैं। स्त्री वर्ग को मेघाली जागृत करती है। हड़ताल होती है और सारा शहर गन्दगी से भर जाता है। अछूत वर्ग एक हो जाता है। सरकार के ढोंगी नेताओं के खोखलेपन का पर्दाफाश होता है। अछूतों की सुरक्षा नहीं मली, का बोध होता है। दुनियाँ के मजदूरों एक हो जाओ का नारा गूंजता है। मारपीट और ब लदान के बाद हरिजन अपने अ धकारों को प्राप्त करने में सफल हो जाते हैं।

इस प्रकार आ खरी साँस तक शोषण, अत्याचार और असमानता के खलाफ उठ खड़े हुए समाजवादी संघर्ष की अ वस्मरणीय गाथा है।

(2) हजार घोड़ों का सवार **:**

हजार घोड़ों का सवार 'चन्द्र' जी का रेणु व मीरां पुरस्कार से सम्मानित एक महाकाव्यात्मक उपन्यास है।3प्रस्तुत उपन्यास लेखक की वर्षों की साधना का प्रतिफल है। लेखक ने अपने अनुभवों और अध्ययन के दायरों को प्रामा णकता की जाँच पर पका कर परिपक्व रचना प्रस्तुत की है। उनका मानना है क, मार्क्सवाद ने जीवन के सम्पृक्त साहित्य रचना की एक नूतन दृष्टि दी। वह दृष्टि सम्पूर्ण मानवता की पक्षधर है। आम आदमी के उत्पीड़न को कला और साहित्य का माध्यम बनाकर प्रत्येक रचनाधर्मी उस क्रांति द्रष्टा का कार्य करता है जो परिवर्तन की दशा-दिशा देता है। उस सड़ी व्यवस्था पर प्रहार करने का संकेत देता है, जिसके नीचे मानवता आहत है।4

'हजार घोड़ों का सवार' मे बीकानेर (राजस्थान) के साधारण द लत लोगों के जीवन को ऐतिहा सक सन्दर्भ के साथ मा र्मक रूप में प्रस्तुत कया है। लेखक ने कसी वशेष राजनीतिक दृष्टिकोण को न अपनाते हुए सत्ता और तन्त्र की क मयों को यथार्थ और साहस के साथ प्रस्तुत कया है। इसके लए कथा में तीन पीढ़ियों के संघर्षों को चत्रित कया है।5

वस्तुत:

लेखक का अन्य उपन्यासो से भन्न इस उपन्यास का फलक काफी वस्तृत है। एकाध स्थलों को छोड़कर इसके गठन में कहीं भी हमें कसी तरह का बिखरापन नजर नहीं आता।6 इसकी कथा बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में बीकानेर से शुरू होती है। लगभग पाँच दशकों व दो पीढ़ियों की यह कथा श्री चन्द्र' ने सहानुभूति और करुणा के साथ कही है। कथा नायक गीधू बड़े जीवट का आदमी है। हरिजन होने के बावजूद उसके पास स्पष्टवादिता, साहस और हर अन्याय के खलाफ आवाज बुलन्द करने का हौंसला, पैतृक धन के रूप में सुर क्षत है। मानवता, सभी धर्मों की आधारभूत एकता, समानता और स्वतन्त्रता के सम्बन्ध में उसके वचार क्रांतिकारी हैं। वह सामन्तवादी ग्रामीण समाज, सामन्तवादी पूँजीवादी अर्थव्यवस्था को न सहकर उसके वरुद्ध करना अ धक उ चत समझता है। इसी संघर्ष के दौरान उसका

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Volume 7 -Issue 12-December -2017,
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

ववाह जानकी से होता है। मानवतावादी अलग रजिया बाबा के सम्पर्क में आता है। बाबा छुआछूत व जाति वभेद में वश्वास नहीं रखते। वह संघर्ष के प्रेरक हैं ले कन सामन्तवादी रूढ़िवादी वचारों में वश्वास रखने वाले हत्यारों के हाथों मारे जाते हैं।

उनकी मृत्यु के पश्चात् गीधू एकदम असहाय और कमजोर हो जाता है। सामान सी कहासुनी पर घर छोड़कर साधू हो जाता है। साधू बहता नीर को चरितार्थ करते हुए यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र के उपन्यासों का आलोचनात्मक अध्ययन करना अपे क्षत है।जिसे उपन्यासकार ने सन्दर्भ के साथ मा र्मक रूप में प्रस्तुत कया है। लेखक ने कसी वशेष राजनीतिक दृष्टिकोण को होने के बावजूद उसके पास स्पष्टवादिता, साहस और हर अन्याय के खलाफ आवाज बुलन्द करने का हौंसला, पैतृक धन के रूप में सुर क्षत है। मानवता, सभी धर्मों की आधारभूत एकता, समानता और स्वतन्त्रता के सम्बन्ध में उसके वचार क्रांतिकारी हैं। वह सामन्तवादी ग्रामीण समाज, सामन्तवादी पूँजीवादी अर्थव्यवस्था को न सहकर उसके वरुद्ध करना अ धक उ चत समझता है। इसी संघर्ष के दौरान उसका ववाह जानकी से होता है। मानवतावादी अलग रजिया बाबा के सम्पर्क में आता है। बाबा छुआछूत व जाति वभेद में वश्वास नहीं रखते। वह संघर्ष के प्रेरक हैं ले कन सामन्तवादी रूढ़िवादी वचारों में वश्वास रखने वाले हत्यारों के हाथों मारे जाते हैं।

उनकी मृत्यु के पश्चात् गीधू एकदम असहाय और कमजोर हो जाता है। सामान सी कहासुनी पर घर छोड़कर साधू हो जाता है। हरिद्वार होते हुए दिल्ली पहुंच जाता है। दिल्ली में गीधू की भेंट कमेडी व चेतू से होती है, जो सामाजिक न्याय और समानता की तलाश में ईसाई हो गये हैं।दिल्ली से गीधू घर आता है। सामाजिक अत्याचार सामाजिक वर्ग वभेद, आ र्थक असमानताएं मलती हैं। जी वकोपार्जन के संघर्ष में वह फौज में भर्ती होता है। मेरठ, चटगाँव, जबलपुर व सेना में छंटनी से वा पस घर लौटता है। आजादी के बाद गीधू गरधारी लाल भारतीय के नाम से साँसद बनता है। साँसद, राजनीति, नयी जिम्मेदारियाँ, नया रहन-सहन, ट्रांसफर की राजनीति, सत्ता ह थयाने के गठबन्धन, स्वार्थपूर्ण वातावरण, गोधू की घुटन और तड़फन बढ़ाते हैं। एक दिन कुटिल राजनीतिज्ञों के घात-प्रतिघात के मध्य कुछ हरिजनों को उनके न्यायपूर्ण अ धकार दिलाने के संघर्ष में गीधू शहीद हो जाता है फर शहीद गरनार का स्मारक बना दिया जाता है।

उपन्यासकार ने कथा को यहीं से प्रारम्भ कर यहीं पर कुशलता के साथ समाप्त कया है। तत्कालीन समाज में सूदखोरी, बेगार, जातीय अत्याचार, सामाजिक अन्याय के संघर्ष को व्यक्त करते हुए मार्क्सवादी समाजवादी वचारों से अनुप्रा णत कथ्य का निरूपण कया है। डॉ. रामगोपाल शर्मा दिनेश ने इसे एक सफल आंच लक उपन्यास माना है। 7डॉ. श्याम संह इसे समाजवादी रचना बताते हैं। 8डॉ. कमला गुप्ता राजस्थानी सामन्तों के अत्याचारों के चत्रण के कारण नव सामन्ती चेतना की रचना

बतातेहैं9। इसका राजनैतिक परिप्रेक्ष्य इसे राजनीतिक श्रेणी के उपन्यासों की श्रेणी में भी स्थान दिलाते हैं।10 लोक कथात्मक उपन्यास की चर्चा करते हुए धरती की पीरएक लोक कथात्मक उपन्यास है।11 यह राजस्थान की प्र सद्ध लोककथा रामू-चना, राजा रिसालू की लोककथाओं पर आधारित है। लोककथात्मक उपन्यासों के क्षेत्र में हिन्दी में यह व शष्ट प्रकार की कृति है। इसका महत्त्व ऐतिहा सक कथाओं से अ धक है उपन्यासकार ने प्रस्तुत उपन्यास में कई लोककथाओं को एक साथ साहित्यिक, मनोवैज्ञानिक और प्रतीकात्मक रूप में प्रस्तुत कर एक अनुकरणीय कार्य कया है। बहुरू पया उपन्यास लोक कथात्मक आधार पर लखा हुआ उपन्यास है। यह जीवन के व भन्न आयामों का चत्रण करता है। मानव के अन्तर्मन की अच्छाइयाँ-बुराइयाँ तथा संवेदनशीलता को भी सशक्त रूप में प्रस्तुत करता है।इस वषय मे स्वयं'चन्द्र' जी लखते हैं, सम्पूर्ण देश में बहुरू पये अलग-अलग सम्बोधनों से पुकारे जाते हैं – स्वाँगधारी, भाँड़, भे डए। इसमें प्राचीनकाल से लेकर समकालीन स्थितियों व सामाजिक वर्ग भेद ऊंच-नीच की भावना जातिगत वर्ग गज बताएं यथार्थ स्थिति का चत्रण है। लोककथाओं का स्पर्श वषय को गहराई देता है। आज इस कला व शाकारों का जीवन कष्टों से भरा है। अत: यह कला समाप्त प्रायः होती जा रही है।12

प्रस्तुत उपन्यास में स्त्री पात्र रेखली, सबरी, पेमली, ताऊ की पोती, छिनकी, हरिया की माँ, फरकली, जहीदन, बनूड़ी, छोगा की पत्नी आदि हैं।सुदामा रेखली के अनुपम सौन्दर्य पर आसक्त था। रेखली का ब्याह पाँच वर्ष की रूप में ही हो गया। सुदामा ने शंकरया का भूत बनकर रेखली के पति पारिया को डराया, इह मर गया। सुदामा ने सुनियोजित तरीके से रेखली को पा लया। बड़ी चालाकी से हड़प लया।13

औरत की ववशता, संतान प्राप्त करने के लए पराये पुरुष से संसर्ग, शराब के नशे में पति के अत्याचार, भूख मटाने के लए स्वाँग धारण करना, छूत-अछूत, ठाकुरों का दोहरा आचरण, मूसलकी का वद्रोही चरित्र इत्यादि का मर्मस्पर्शी वर्णन कया गया है। लोकगीतों का स्पर्श उपन्यास को जीवन्त बनाता है। बहुरू पया बनते आदमी की नियति पर बेबाक टिप्पणी की गई है। जहीदन के माध्यम से जिन्दगी के कई रंगों को उजागर कया गया है। यह सफल कृति है।

समाहार

उपर्युक्त वश्लेषण से स्पष्ट है क 'चन्द्र' ने अपने उपन्यासो के माध्यम से अपने अंचल के समाज की व भन्न समस्याओं को पूरी ईमानदारी के साथ उठाया है। उनके सामाजिक उपन्यासों में अंचल की व भन्न समस्याएं भरी पड़ी हैं। सामन्ती व्यवस्थापरक उपन्यासों के माध्यम से रजवाड़ों, सनकों, शोषण, वला सतापूर्ण और वीभत्स जीवन को बेनकाब कया है। मनोवैज्ञानिक उपन्यासों के माध्यम से

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Volume 7 -Issue 12-December -2017,
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

महानगरीय मूल्यहीनता,अर्थ, लप्सा,काम पपासा, यौन शोषण, वेश्यावृति का सफल चत्रण कया गया है।

ऐतिहा सक उपन्यासों के माध्यम से राजस्थान की गौरवशाली परम्परा त्याग, ब लदान, आत्मोत्सर्ग की अ भव्यक्ति की गई है। राजनीतिक उपन्यासों के माध्यम से ओछी मनोवृत्ति, गन्दी राजनीति, भ्रष्टाचार, समसामयिक परिप्रेक्ष्य में सामने आती है। लोककथात्मक उपन्यास प्रान्त के जनजीवन में प्रच लत लोक प्रय लोककथाओं की रंगीन छटा को उभारते हैं। बहुआयामी चरित्रइस प्रकार समग्र रूप से कहा जा सकता है क राजस्थान के को प्रस्तुत करने वाले ये उपन्यास अपने समय के साक्ष्य हैं।इस प्रकार ववाहेत्तर सम्बन्ध दाम्पत्य जीवन सुखमय जीवन व्यतीत कर नारी के जीवन स्तर पर पहुंच कर शव की भावना व्यक्त कर समाज देश व परिवार को सन्देश दिया है।

उपन्यासकार ने सु ध के चरत्र को वक सत करने में गाँधीवादी दर्शन संयम का उपयोग भी कया है।जग की वैधव्य रीत को तोड़ती पार्वती के चरित्र को उद्घाटित कर नारी जीवन संघर्ष व परिवार समाज देश प्रेम त्याग समर्पण कीयह एक व शष्ट पहचान को नवीनतम और जीवन्त चत्रण समाहित कर द लत शो षत वं चत वर्ग भेद ऊंच-नीच राजपूत वप्र वैश्य और शुद्र मध्य होने भेदो को प्रस्तुत उपन्यास के माध्यम बनाकर प्रयोग कर द लत जो की पीडा को बताया है।

उपन्यास की नायिका शारदा की बहिन है—पार्वती। उसे ससुराल जाने के बाद कभी भी सुख नहीं मला। माँ मृत्यु की गोद में बेटी से मलने की साध लेकर चली गई पर उसकी कठोर सास का कलेजा नहीं पसीजा। 2.

उसका पति गुण्डे के द्वारा मारा जाता है। पार्वती अपनी जीजी शारदा से कहती है, जीजी अब एक बच्चे को जन्म दे दो। मुझे बच्चा खलाने की बड़ी मन में आती है। 3

पार्वती भाग्यवाद में वश्वास नहीं रखती। वह भाग्य में जो लखा है, उसे भोगना ही पड़ेगा, को नकारती हुई कहती है, यदि भाग्य इतना कठोर है तो मैं उसे भाग्य को ही खत्म कर दूंगी।" मैं मीरां नहीं बन सकती। पत्थर को सर्वस्व समर्पण नहीं कर सकती। उसके समक्ष प्रेम और तड़प को नहीं रख सकती।' 4 5

जब वह वधवा होने के बाद अनूप के साथ सनेमा देखने जाती है तो उसकी सास कहती है, उसने मेरे कुटुम्ब की नाक कटवा दी। अनूप से सम्बन्धों में उसका द्रोह परिल क्षत होता है। वह भाग्य के नाम पर जीवन के सभी सुख के क्षणों को तिलांज ल नहीं दे सकती। स्पष्ट कह देती है, मैं और स्त्रियों की तरह छिप-छिप कर पापाचार करती फरूँ और तुम सबके सामने महान भक्तिन बनने का ढोंग करूँ? मैं सत्य को सत्य की तरह ग्रहण करना चाहती हूँ।' पार्वती धर्म, समाज,परिवार और मन प्रसन्न होकर अकेली ही अपना रास्ता बनाती है। मैं पतिव्रता नहीं बनना चाहती। सच नारी को अब अपने भले बुरे के बारे में

सोचना होगा। पति को परमेश्वर नहीं, एक साथी समझना होगा। तभी शोषण मुक्त होगी नारी।श्री यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' ने शोषण मुक्त नारी की कामना की है। नारी का आ थक स्वावलम्बन आवश्यक है।इस उपन्यास में अन्य नारी पात्र अमृता भी भंवर के शोषण की शकार होती है।

देह व्यापार के गुनाहों में लप्त देवी गवरा की बिगड़ती स्थिति मार्क्सवादी चेतना से ओतप्रोत प्रोत् है।

गवरा का जन्म होने पर उसकी माँ चम्पा मर गई। बाद में दादा मर गये। उसे डायन कहने लगे। न जाने यह डायन कस- कस को खायेगी? गवरा को दादी ने दूध पला कर जैसे-तैसे बड़ा कया। गवरा का पति बीमार हुआ और वह भी मर गया। गवरा वधवा हो गयी। दादी कहती है, हिन्दू समाज में पति की मृत्यु के साथ एक पत्नी की भी हत्या हो जाती है। उसके बनाव शृंगार की मृत्यु हो जाती है। गवरा का भी आनन्द मर गया। उसकी मुसकान मर गयी और मर गयी उसके जीवन की अनागत इच्छाएं।' जी वत रह गया इस समाज का खौलता हुआ नरककुण्ड। समकालीन परिवेश मे व्याप्त सामाजिक-आ थक वकास और सुधार पर वचार प्रस्तुत कए है।उदहारण देकर सद्द कया है।

अबोध बा लका गवरा ने भी समझ लया क उसका पति मर गया। वह न दहाड़ मारकर रोई और न ही उसने अपना सर फोड़ा, ले कन जब उसके नन्हें मुन्ने हाथों की प्यारी-प्यारी कलाइयों की चू ड़याँ तोड़ी गई, तब न जाने क्यों दो बूंदे आंखों की कोरों की मर्यादा को तोड़कर बह चलीं।'

निष्कर्ष:-

हिंदी के समृद्ध कथा साहित्यकार यादवेंद्र शर्मा चंद्र के संपूर्ण कथा साहित्य का यदि संहावलोकन करें तो उन्होंने धोरा वाली संस्कृति को स्वीकृति प्रदान कर हिंदी साहित्य को समृद्ध बनाने में जो योगदान दिया है वह श्लाघनीय है। राजस्थान की वशेष रूप से पश्चिमी राजस्थान की जो राजपूती संस्कृति है उसमें नारी की दशा एवं दिशा कस प्रकार की थी और कालांतर में उसमें परिवर्तन कस प्रकार से हुआ ।इनके सभी उपन्यासों में कहानियों में समग्र वश्लेषण स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। समकालीन पर वकास का अध्ययन करते हुए कथाकार ने नारी जीवन में व्याप्त वसंगतियों का स्पष्ट उल्लेख कया है। जो तथाक थत उच्च और निम्न वर्गीय परिवारों की महिलाओं की दयनीय स्थिति ,अ शक्षा ,बेरोजगारी एवं सामंती परिवेश के यथार्थ से जुड़ी हुई गांव में देखने को मलता है ,दिखाई देता है समाज के सभी वर्ग वशेष को एवं जाति संप्रदाय से दूर हट कर वधा का प्रमुख वषय बना कर सृजन कया है जो भावी पीढ़ी के लए प्रेरणा का स्रोत सद्ध होगा।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Volume 7 -Issue 12-December -2017,
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

सन्दर्भग्रन्थ सूची:-

१ समाज कल्याण पत्रिका, १९७४,पृष्ठ, १२

२ डॉ, आदर्श सक्सेना-सप्ताहंत राजस्थान अकं १९७३,पृष्ठ, १७

३ सन्मार्ग प्रकाशन, १६,यू,बी,बेंगलो रोड,दिल्ली, ७{१९८१}

४ यादवेन्द्र शर्मा मै इतना ही कहूंगा पृष्ठ १६७

५ सुरेन्द्र तिवारी कालबोध वशेषांक, १९८२,समीक्षा, पृष्ठ ६८

६ सुरेश डनियाल नया शक्षक, पृष्ठ १०१

७उपन्यासकार यादवेंद्र शर्मा चंद्र के उपन्यासों का अनुशीलन पृष्ठ १५२

८ हिंदी उपन्यासो मे सामन्तवाद, पृष्ठ,२४९

९ कृष्ण कुमार बिससा साठोत्तरी हिन्दी उपन्यासो मे राजनैतिक चेतना, पृष्ठ ३८

१०यादवेन्द्र शर्मा मै इतना ही कहूंगा पृष्ठ ३०

११ यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र बहुरू पया पृष्ठ १३

१२ गुनाहों की देवी, पृ. 28

13 गुनाहों की देवी, पृ. 46